

তিতাস চৌধুরী

দ্বিতীয় দফা ভাষাবিদ্রোহও কম গুরুত্ব ছিল না। এটিও পাকিস্তানের রাজধানী করাচি সংঘটিত হয়। ১৯৪৮ সালের ২৩ ফেব্রুয়ারি পাকিস্তানের গণপরিষদে (জাতীয় সংসদ) বাংলাভাষার সপক্ষে বাঙালি সাংসদ বীরেন্দ্র

নবাবের প্রাচীন কীর্তিগান। 'উপা' এখনকার
উর্দু হবে পাকিস্তানের 'উর্দু'। এ সকলই
ভর-ভর ভূতীয় ভাষা আলাবিশেষ। এ সকলই
আবারের নবাবও এ ভাষা নিয়ে নবল
ভাষা জারি করি। ভাষার প্রশ্নে আবারে
একদম এক সরকারের বাণ্য হবে তুর্কি
নবাবই। এ সরকারের বাণ্য আর একশে
ফকরখানীতে পূর্ব পাকিস্তানে জয়লাভ
সুফারী নবল আবারে নিবির জয়লাভ
মিছিলে নিবিরের গুলি লাগিয়েছিল। যদিও ১৪৪
ভাষা ভর-ভর করা চাকর চাকর জয়লাভ
নবাব আবারে মিছিল সামান্য দিকে এগিয়ে
যাকার দিকই লাগিয়ে। কিন্তু নবাবই
নবাবের গুলি এ নবল পূর্ণপূর্ণ আট
দিয়েছিল এবং মুখেই বরিক, জম্মা, করত,
সানাতনীন প্রমুখের বৃক্কের হস্তে করত
রাজপত্র রচিত হবে গিয়েছিল। প্রাণের

এ উদ্যোগের নেতৃত্ব দিয়েছিলেন। এছাড়াও মুন্সেফরাইল পঞ্চায়েতের সভাপতি, জগদীশ, কালীন, শাহরিয়ার, নাজিম, ফিরাহাও এ আন্দোলনের কিছুসংখ্যক ভারতীয়। ফলে এ আন্দোলনের অধিকাংশ প্রেরণার ব্যাপার।

ইউনেস্কোয় যাওয়ার মানুষের মুন্সেফরাইল দারিগতরাও প্রতিনিধি বিতরণক ইসলামে ফরাসি মাদ্রাসার শিখিত একটি চিঠিতে মজাহারীকালীন মানুষকে বিবিসনে প্রেরণ। অতঃপর, উল্লেখ্য এ অর্জন করে ফরাসি এ সম্পদকে একটি যোগ্যতা আদায় করতে-যোগেছিলেন। কিন্তু সব ইচ্ছা-বিশেষকে পর উদ্ভাটনা দিয়েছিল ইসলামী। ইউনেস্কো কালিয়েছিল। এ প্রকল্পে কোনো সফল প্রচেষ্টা গ্রহণযোগ্য হয়ে ন। বরং এখানে কোনো দেশকে তা সফরকারীকরণ প্রকল্প করতে চায়।

এ নীতিকা বাংলাদেশের সরকার বিবাহিত জনসংখ্যার সৃষ্টি করে এবং এর নীতিকা-বিশেষ শিখা সর্বাঙ্গ, শিক্ষাশাখী প্রমুখের পাঠ্যক্রম প্রেরণ করত।

প্রসঙ্গত বলতেই হয়, বায়ান থেকে নিম্নলিখিত পর্যন্ত এ ৪৭ বন্ধ একশের মতী আদৌ নিষ্পত্ত ছিল না। বহু একশের আন্দোলন আমাদের জাতির দুর্দিনে সমবেত যথার্থ ভূমিকা পালন করেছে। গতবৎনিকের একশের আন্দোলন আত্মজীবে-গেবাবান করেই একশের চেতনা অক্ষর-বাক্যের উজ্জীবিত হয়েছি। উভারিত হয়েছি, এ উচ্ছ্ব হয়েছি। সেজন্যই ভাবি প্রতি আমাদের চেতনা-এতে গভীরে। স্বরত না, মাতৃভূমি এ মাতৃভার প্রিয় সমাজ দুর্দিনত অগেই জামার বিশ্রামের সময়দা। মাতৃভাষা ইকুটি পেয়েছে বিশ্বের দরবারে। এ ইকুটি প্রধানত রক্ষিত

হিসেবে ফারান বইজ আতঙ্কিত করেছে এবং ভাষায় দ্বিধা করছেন একজন বাঙালি যুবকবি রবীন্দ্রনাথ ঠাকুর সাহিত্য ক্ষেত্রে ১৯৩৩ খ্রিষ্টাব্দে নোবেল পুরস্কার লাভ করেছেন। তিনি পৃথিবীর প্রায় দুই মিলিয়ন মানুষ বাংলায় কথা বলে।

এরপরও আতঙ্কিত হবেন 'মাদারস্যার' নির্দেশে মোহনা দেয়ার জন্য আসেন প্রয়াচ-কল্যাণের ললবিং করতে যান। জরাজীর্ণ ১৯৯৯ সালের নতুঙ্গের আ মাদারস্যার পরিণত হইলেন মাদারস্যার একশ ঘন বিশেষ সর্বস্বত্বাধীন (১৮৮৮) দেশের সব মানুষের এবং সর্বস্বত্বাধীন টাটা সাম্রাজ্যের বাণ্যার নয়।

তিতাস চৌধুরী: সাহিত্যিক ও অধ্যাপক

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96	97	98	99	100	101	102	103	104	105	106	107	108	109	110	111	112	113	114	115	116	117	118	119	120	121	122	123	124	125	126	127	128	129	130	131	132	133	134	135	136	137	138	139	140	141	142	143	144	145	146	147	148	149	150	151	152	153	154	155	156	157	158	159	160	161	162	163	164	165	166	167	168	169	170	171	172	173	174	175	176	177	178	179	180	181	182	183	184	185	186	187	188	189	190	191	192	193	194	195	196	197	198	199	200	201	202	203	204	205	206	207	208	209	210	211	212	213	214	215	216	217	218	219	220	221	222	223	224	225	226	227	228	229	230	231	232	233	234	235	236	237	238	239	240	241	242	243	244	245	246	247	248	249	250	251	252	253	254	255	256	257	258	259	260	261	262	263	264	265	266	267	268	269	270	271	272	273	274	275	276	277	278	279	280	281	282	283	284	285	286	287	288	289	290	291	292	293	294	295	296	297	298	299	300	301	302	303	304	305	306	307	308	309	310	311	312	313	314	315	316	317	318	319	320	321	322	323	324	325	326	327	328	329	330	331	332	333	334	335	336	337	338	339	340	341	342	343	344	345	346	347	348	349	350	351	352	353	354	355	356	357	358	359	360	361	362	363	364	365	366	367	368	369	370	371	372	373	374	375	376	377	378	379	380	381	382	383	384	385	386	387	388	389	390	391	392	393	394	395	396	397	398	399	400	401	402	403	404	405	406	407	408	409	410	411	412	413	414	415	416	417	418	419	420	421	422	423	424	425	426	427	428	429	430	431	432	433	434	435	436	437	438	439	440	441	442	443	444	445	446	447	448	449	450	451	452	453	454	455	456	457	458	459	460	461	462	463	464	465	466
---	---	---	---	---	---	---	---	---	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----

১
২
৩
৪
৫
৬
৭
৮
৯
১০
১১
১২
১৩
১৪
১৫
১৬
১৭
১৮
১৯
২০
২১
২২
২৩
২৪
২৫
২৬
২৭
২৮
২৯
৩০
৩১
৩২
৩৩
৩৪
৩৫
৩৬
৩৭
৩৮
৩৯
৪০
৪১
৪২
৪৩
৪৪
৪৫
৪৬
৪৭
৪৮
৪৯
৫০
৫১
৫২
৫৩
৫৪
৫৫
৫৬
৫৭
৫৮
৫৯
৬০
৬১
৬২
৬৩
৬৪
৬৫
৬৬
৬৭
৬৮
৬৯
৭০
৭১
৭২
৭৩
৭৪
৭৫
৭৬
৭৭
৭৮
৭৯
৮০
৮১
৮২
৮৩
৮৪
৮৫
৮৬
৮৭
৮৮
৮৯
৯০
৯১
৯২
৯৩
৯৪
৯৫
৯৬
৯৭
৯৮
৯৯
১০০